EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter)
Patron: Prof. R. G. Kothari
Chief Editor: Prof. Jignesh B. Patel
Email:- Mo. 9429429550 ctefeduinspire@gmail.com

महाभारत में कर्ण की भूमिका

डिंपी दिपक बजाज
राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज विश्वविद्यालय, नागपूर

कर्ण : कर्ण कुंती का कुमारी अवस्था का प्रथम पुत्र जो पांडव नहीं माना गया और कारण भी स्पष्ट है। जो पंडित श्रेष्ठ है वह पंडु है। कर्ण वैसा नहीं, वह केवल कर्ण द्वारा जो कुछ भी सुना जाए उसे ही आत्मज्ञान माननेवाला अपूर्ण साधक बताया गया है। उपनिषद कहते हैं-'नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यः न मेधया न बहुना श्रुतेन। यमेवैषवृणुते तेन लभ्यः तस्येष आत्मा विवृणुते तनूऽस्वाम्।। आशय यह कि, 'आत्मज्ञान केवल प्रवचन देकर अथवा सुनकर प्राप्त नहीं होता, उसके लिए कठोर आत्मसाधना और चिंतन करना आवश्यक है।' साधारण लोग यह मानते हैं कि, वे जब बहुत पुस्तकें पढ़ते हैं एवं प्रवचन सुनते हैं, सुनाते हैं, तो वे ही सच्चा आत्मज्ञान पाते हैं। ऐसी अधकरचरी बुद्धि के साधकों को वेदव्यास कर्ण कहते हैं। यह वृत्ति प्रथम अवस्था के समय हर साधक में रहती है। कुंती साधक यही समझ बैठी थी कि उसकी प्रत्यक्ष प्रत्यक्षज्ञान रूप सूर्य द्वारा प्राप्त पुत्र संतान उसे पूर्ण ज्ञान देगी, परंतु वह थी ज्ञान के गहन स्तर काटनेवाली कुंती अवस्था! उसने तुरंत जाना कि उसकी प्रथम पुत्र संतान पूर्ण ज्ञान नहीं वरन् अधूरा ज्ञान देनेवाली कर्ण अवस्था है। कुंती ने तुरंत कर्ण अवस्थारूप पुत्र को अधिक ज्ञान प्राप्ति हेतु ज्ञानगंगा के प्रवाह में डाला। परंतु यह कर्ण अवस्था पूर्ण ज्ञान न बन कर अधकरचरे ज्ञान रूप कर्ण तक सीमित रही। उसे अधिरथ नामक सूत ने और उसकी पत्नी आनन्दावस्था राधा ने स्वीकार किया। इसलिए स्वाभाविक है कि ऐसी कर्णावस्था दुःमार्ग द्वारा राज्य मिलानेवाले कर्मकाण्डी दुर्योधन का मित्र बने। कर्ण को अपने राज्य का छोटा हिस्सा देकर दुर्योधन ने उसे राजा बनाया। कर्ण वृत्ति अंत तक दुर्योधन की मित्रता में दुर्योधन के लिए समाप्त हुई। कर्ण सभी पांडवों में अर्जुन से विशेष द्वेष एवं विरोध करता था। कारण अर्जुन सच्चा ब्रह्मज्ञान प्राप्त करनेवाला साधक था और कर्ण केवल कानों से जो जानकारी सुनते हैं उसे ही पूर्ण ज्ञान माननेवाला था। शब्द पांडित्य करनेवाले दिखावटी लोग इसी प्रकार सच्चे ज्ञानी पुरुषों से द्वेष और विरोध करते हैं। ऐसे दिखावटी ज्ञानी भी यह मानते हैं कि उनके आत्मज्ञान का शरसंधान केवल वाद-विवाद और तर्क-वितर्क तक सीमित है। सभा में अपना तार्किक शब्द-आडम्बर दिखाकर वे स्वयं को सच्चे ज्ञानी से श्रेष्ठ बताते हैं। कारण इस प्रकार शब्द जाल बिछानेवाले पाखंडियों को ही जनता सच्चे ज्ञानी मानती है। विद्वान् सभा में दिखावटी पंडित ऐसे ही विजय पाते हैं। इसलिए महाभारत में यह दिखाया है कि कई बार कर्ण के सामने अर्जुन को खुलेआम युद्ध करना कठिन जाता रहा। कर्ण के विवाद वित्तर्क रूप युद्धधर्म को छोड़कर ही अर्जुन कर्ण को जीत सका अन्यथा कर्ण सब पांडवों को समाप्त करता। द्रोपदी, जो अर्जुन द्वारा पांच पांडवों की पत्नी बनी, उसके स्वयंवर के समय कर्ण भी गया था परंतु द्रोपदी ने वह शूद्र (सूत पुत्र) है इस बहाने पर उससे विवाह करना अस्वीकार किया था। द्रुत गति से आत्मज्ञान प्राप्त करा सकनेवाली द्रोपदी वृत्ति स्वयं को केवल शाब्दिक पांडित्य द्वारा आत्मज्ञान प्राप्त हो सकता है यह मानने वाले कर्ण वृत्ति को अपना पति इस नाते क्यों स्वीकार करें? पश्चात् आया अर्जुन जिसने एक ही ब्रह्म भेदनेवाले शर को मत्स्यनेत्र में मारकर द्रोपदी को प्रण में जीता। तब से कर्ण अर्जुन का द्वेष और भी अधिक होता है। इसी कारण कर्ण दुःशासन द्वारा द्रोपदी का खुलेआम वस्त्रहरण देखता है। पांडवों को वनवास करा और एक साल के अज्ञातवास में दुर्योधन के साथ वह विराट राजा की विराट नगरी पर हमला कर विराट राजा की गौंवे भगाने की चोर चेष्टा करता है। इस उत्तर गोग्रहण में कर्ण ने एक देव गौ को इतना मारा कि वह आधी भूमि में धंस गई। उस देव गौ ने कर्ण

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

को श्राप दिया कि कर्ण भी उसी प्रकार मरेगा। और वैसा ही हुआ। कर्ण उस समय कौरव का सेनापति था। उसका वह दूसरा दिन था जब उसने दुर्योधन को विश्वास से कहा था कि वह समस्त पांडवों को नष्ट करेगा। इतने में अर्जुन से युद्ध करते-करते कर्ण के रथ का एक पहिया आधे हिस्से तक भूमि निगल गई। शरीर रूप रथ के दो पहिये है, एक मन और दूसरा विवेकबुद्धि। कर्ण का विवेक रूप पहिया भूमि निगल गई। उस पहिये को बाहर निकालने हेतु कर्ण रथ से नीचे उतरा और पहिया निकालने लगा। इतने में अर्जुन को भगवान कृष्ण बताते हैं, कि अब कर्ण उसके विवादवितर्क रूप अस्त्रशस्त्र विहीन है अतएवं इस समय उसे मारना सरल है। कर्ण कथित धर्म की याद दिलाकर कहता है कि शस्त्रविहीन शत्रू पर शस्त्र प्रहार करना अधर्म है। श्रीकृष्ण उसे कहते हैं कि उस जैसे अधर्मी नीच को अधर्म से मारना ही सच्चा धर्म है। अर्जुन अपना ब्रह्म रूप तीर चलाकर कर्ण वृत्ति नष्ट करता है। ऊपर की गोग्रहण की कथा में "गौ" अर्थात् इंद्रियां मानने से सब कथा स्पष्ट हो जाएगी। वे सब कौरव पक्ष के पाखंडी वीर हैं जो इंद्रियों का अर्थात् गौओं का ताडन कर उस कर्म द्वारा उन्हें सच्चा ब्रह्म ज्ञान प्राप्त हुआ यह मानते हैं। इस प्रकार कर्ण वृत्ति ने अपने देवतुल्य इंद्रिय रूप गौ का ताडन किया जिससे वह वृत्ति रूप युद्ध में अर्जुन से परास्त होकर नष्ट हुआ। यह सब घटना उत्तरगोग्रहण के समय होती है। द्यूत में कौरवों द्वारा पांडव हारते हैं। द्यूत की शर्त के अनुसार पांडवों को बारह वर्ष वनवास और एक वर्ष अज्ञातवास करना है। अज्ञातवास के समय पांडवों को यदि खोज निकाला जाए तो उन्हें पुनः बारह वर्ष वनवास और एक वर्ष अज्ञातवास करना आवश्यक है। इसलिए स्वयं को गुप्त रखने को पांडव सर्तक रहते हैं एवं उन्हें खोज निकालने के लिए कौरव प्रयत्नशील रहते हैं। अज्ञातवास के समय पांडव विराट नामक राजा के विराट नगरी में अपने-अपने पूर्व नाम बदल कर एवं सेवाकार्य बदल कर रहे। ज्येष्ठ भ्राता धर्मराज विराटराजा के सभा में कंक नामक ब्राह्मण, भीम वल्लभ नामक रसोइया, अर्जुन नाचगाना सिखानेवाली बृहन्नडा स्त्रीवेश में, द्रोपदी रानी की निजी सेविका और नकुल सहदेव इसी प्रकार अन्य सेवक बनकर रहें। बहुत कष्ठ के बाद कौरवों को पता लगा कि पांडव विराटनगरी में हैं परंतु वे किस स्वरूप में और कहा है। यह पता न लगा। इसलिए उन्हें खोज निकालने के विचार से दुर्योधन ने विराटनगरी पर हमला कर विराट राजा की गौएं चुराकर भगा लेने का सोचा। योजना तैयार हुई और कौरव पक्ष के सभी वीर, भीष्म, कर्ण, दुर्योधन आदि विराट नगरी पर हमला करने निकलते हैं। कौरव सेना विशाल थी जिसके दो विभाग किए और यह तय किया गया कि एक विभाग विराट नगरी के दक्षिण द्वार से हमला करेगा और दूसरा विभाग, जिसका नायक स्वयं दुर्योधन था, विराट नगरी के उत्तर द्वार से हमला करेगा। दक्षिण द्वार पर हमला कर राजा का पराजय करना सुलभ होगा। दक्षिण द्वार पर हमला होते ही राजा विराट, उसकी बहुत सी सेना वल्लभ (भीम), नकुल सहदेव और कंक (धर्मराज) सहित हमला रोकने के लिए गए। अब उत्तर द्वार पर दुर्योधन द्वारा हमला हुआ। उत्तर द्वार को रोकने के लिए कोई विराट वीर बाकी नहीं रहने पर बृहन्नडा रूप अर्जुन ने उत्तर दिशा का हमला रोकने सोचा। बृहन्नडा रूप कायम रखकर युद्ध करने अर्जुन जाता है। तत्पूर्व अपने अस्त्र-शस्त्र, जो विराटनगरी के बाहर एक शमी वृक्ष पर छिपा रखे थे, निकालता है। वे किसी के ध्यान में न आवें इसलिए उन पर एक शव बांधकर रखा था। जिन्हें रखकर एक साल हो रहा था। यह सब काम करने हेतु बृहन्नडा ने विराट राजा के पुत्र उत्तर को अपने साथ अपने रथ का सारथी इस नाते लिया। उत्तर अवाक् रहा कि एक स्त्री, बृहन्नडा, जो उसको गाना बजाना सिखाती थी, इस समय एक वीर जैसे कैसे वर्तन कर रही है। अर्जुन ने उसे अपना असली स्वरूप बताया और कहा कि वह उस बारे में किसी को नहीं बताएं। अस्त्र-शस्त्र लेकर वीर बृहन्नडा रथ पर संवार हुई जिसका सारथ्य राजपुत्र उत्तर कर रहा है। इधर असंख्य कौरव सेना जिसमें दुर्योधन, दुःशासन, कर्ण, भीष्म आदि महारथी है और विराट राजा की ओर से केवल एक स्त्री और उसका सारथी कुमार उत्तर है। कौरव अचंबे में रहे कि यह स्त्री एक बच्चे के साथ कैसे युद्ध करेगी? परंतु चमत्कार यह रहा कि समस्त कौरव सेना और उसके महारथी वीरों को केवल बृहन्नडा रूप अर्जुन परास्त करता है। कौरव सोच ही रहे कि वह बृहन्नडा कौन रह सकती है कि बृहन्नडा ने अपना सम्मोहन अस्त्र चलाकर सारी कौरव सेना को सम्मोहित किया। समस्त कौरव सेना बेसुध अवस्था में सुस्त पड़ी देखकर भी कुछ कर न सके। सम्मोहनास्त्र का वह परिणाम था। कौरवों की यह विकल्प

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

अवस्था देखकर बृहन्नडा ने उत्तर को कौरवों के सारे वस्त्र उतारकर उन्हें नग्न करने कहा। उत्तर ने वैसा किया। नग्न होने पर सारे कौरव सुधबुध पर आये और वहां से भाग कर हस्तिनापुर लौटे। इस प्रकार वीर अर्जुन ने बृहन्नडा रूप में विराट नगरी का भयानक हमला विफल किया। महाभारत में इस प्रसंग को 'उत्तर गोग्रहण' कहा है। यह समस्त कथा एक अद्‌भूत उपन्यास जैसे लगती है परंतु उसका व्यास आशय एकदम भिन्न है जो योग मार्ग की साधनाओं का इतिहास है। समस्त कथा ऐतिहासिक ढंग से असंभव है कारण एक बृहन्नडा वीर सहस्रावधि कौरवों के विरूद्ध लड़कर विजयी नहीं बन सकती। अपने पूर्व अस्त्र-शस्त्र निकालने के लिए बृहन्नडा एक शमी वृक्ष के पास जाती है और एक शव (लाश) के नीचे छिपाये अस्त्र-शस्त्र निकालती है। शव तीन-चार दिनों के बाद सड़कर उससे दुर्गंध आती है, जिसको पाकर, शव खाने हेतु चील, गिद्ध और सियार आदि पशु जुट जाते हैं। परंतु वह शव एक साल के बाद भी जैसे का वैसा रहता है जो असंभव है। उसका आशय यह है। पांडवों का बनवास अर्थात् बारह साल की तपस्या है जो हर अध्यात्म साधना करनेवाला साधक करना उचित समझता है। इस प्रकार अध्यात्म साधना करने पर हर साधक ने तपस्या में उसने जो पाया उसे किसी को बताना अथवा दिखाना नहीं चाहिए। वह साधक कम से कम एक साल तो भी साधना फल के बारे में किसी को कुछ न कहे अर्थात् व्यास कथा के अनुसार अज्ञातवास में रहे। जो साधक 12 साल तपस्या करने के पश्चात् अपनी साधना फल अथवा चमत्कार लोगों को दिखाने की चेष्टा करेगा उसकी तपस्या फलहीन होकर बेकार होगी। उसे पुनः बारह साल तपस्या करनी पड़ेगी। बारह साल वनवास और एक साल अज्ञातवास जिसमें पांडव खोजे जाए तो उन्हें फिर बारह साल वनवास करना पड़ेगा। इस कथा में अध्यात्म साधना का एक महत्वपूर्ण रहस्य व्यास कथा द्वारा साधकों के सन्मुख रखते हैं। आज साधक थोड़ी-सी दिखावटी साधना कर उसे तुरंत लोगों के सामने विशाल पैमाने पर प्रस्तुत करना चाहते है। यह उनका छिछलापन है यह इस कथा द्वारा व्यास बताना चाहते है, परंतु कितने सुंदर ढंग से? विराटनगरी अर्थात् अपना विराट अस्तित्व है जिसमें साधक पांडव पत्नी द्रोपदी सह वेश और उद्यम बदल कर रहते हैं। जो सच्चे सन्यासी हैं वे इसी प्रकार अपना पूर्व नाम, भेष एवं उद्यम बदलकर जीवन के विराट नगी में रहते हैं। सन्यासियों का उद्यम अर्थात् समाजसेवा रहनी चाहिए इसलिए राजा विराट के विराटनगरी में पांडव वेष और नाम बदलकर विराट नगरी में सेवक बनकर रहें। धर्मराज कंक ब्राह्मण बने। ऋग्वेद में 'कंकतो कंक' नामक अति महत्वपूर्ण ऋचा है जिसका अभ्यास और साधना कर साधक ब्रह्म जान सकता है अर्थात् वह ब्राह्मण बन सकता है। इसलिए धर्मराज कंक नामक ब्राह्मण बनें। सन्यास ग्रहण के बाद साधक को अध्यात्म में सच्ची रुचि आ सकती है जिसको पाने के लिए साधक को अच्छा पाकशास्त्री बनना चाहिए। अब यह पाकसिद्धि अध्यात्म की है जो कि वल्लभ बनकर साधक भीम ने की। वल्लभ अर्थात् अपने अवस्थाओं का स्वामी, इंद्रियों का स्वामी, गोस्वामी! द्रोपदी सैरन्ध्री बन रानी की परिचारिका बनी। सैरन्ध्री अर्थात् रन्ध्र (छेद) सहित काया जो अब योग नाडियों के खुलने से पूर्ण बन गई है और पूर्णता के कारण साधक द्रोपदी अब विराट नगरी के रानी की परिचर्या सेवा करती है। अर्जुन बृहन्नडा बने। पुरुष होकर भी वे एक किंपुरुष (हिजड़े) बने जिसका कारण आध्यात्मिक है। बृहत्$नडा शब्दों से बृहन्नडा नाम बनाया गया है। बृहत् अर्थात् सब और नडा अर्थात् योग नाड़ियां। जिसकी समस्त योग नाड़ियां अब उच्च शुद्ध बनी है उसे व्यासजी बृहन्नडा कहते हैं। इस अवस्था का साधक अपने सब भावों से विरक्त अर्थात् नपुंसक रहता है जैसे, पंडु नपुंसक बताये हैं। इसलिए वीर अर्जुन अब विराट नगरी में नपुंसक बृहन्नडा बनकर अज्ञात रहे जिससे वे स्वयं की पूर्व अवस्था को भूल गए। परंतु अब साधना की उत्तर अवस्था आ गई जो परिपूर्ण रहती है। इसलिए विराट राजा का पुत्र उत्तर वीर अर्जुन के प्रयास रथ का सारथी बनता है। कौरव भी पांडवों के इस पूर्ण उत्तर साधना अवस्था को मान कर विराट नगरी के उत्तर द्वार पर हमला करने आए। दुष्ट प्रवृत्ति कौरव भी अब साधना की उत्तर अवस्था को मान गए जिस अवस्था में उनका नपुंसक वृत्ति बृहन्नडा से हार माननी पड़ती है, वह भी सम्मोहनास्त्र द्वारा! सम्मोहन अर्थात् पूर्व बुरे अवस्था का विस्मरण होना हैं। यह पूर्व वृत्ति विस्मरण अर्थात् अर्जुन का कौरवों पर किया हुआ सम्मोहनास्त्र है। यहां वस्त्र को वृत्ति की उपमा दी है। वस्त्रहरण अर्थात् कौरवों का वृत्तिहरण है। एक व्यक्ति के सारे वस्त्रहरण करने में कम से कम आधा घंटा लग सकता है इस

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

प्रकार सहस्त्रों कौरव वीरों का वस्त्रहरण करने के लिए उत्तर राजपुत्र, यदि दिनरात भी कार्य करे तो, उसे कई साल लग सकत हैं जिसे महाभारत में उत्तर ने एक क्षण में किया। वृत्तिहरण एक क्षण में ही होती है। फिर उन वस्त्रों का अर्जुन और उत्तर ने क्या किया? उसका भी उत्तर नहीं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि एक राजपुत्र होकर उत्तर को दूसरों के वस्त्रहरण करना शोभा ही नहीं देता। कोई भी राजपुत्र यह कार्य कदापि न करेगा। इसलिए यह मानना पड़ेगा कि यह वस्त्रहरण प्रत्यक्ष न रहकर वृत्तिहरण ही हो सकता है। कौरवों के उत्तर गोग्रहण कथा का शास्त्रीय विवेचन गीता में आया है-यततो ह्यापि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः । इंद्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ।। अ. 2, श्लो. 60 ।।

कर्ण की वीरता और औदार्य : कर्ण को अर्जुन से भी बढ़कर अधिक शूरवीर दिखाया है। कर्ण की यह वीरता वाचालता से है, प्रत्यक्ष नहीं। 'जादा बोले सो पंडित' यह कर्ण की रूपरेखा है। उन्हें यदि कोई थोड़ा भी पूछे तो उत्तर में ऐसे बकवासी जन कई गुना अधिक कथित ज्ञान का दान करते हैं और लोग उन्हें बड़ा ज्ञानी मान कर उन्हें ज्ञानदान की सराहना करते हैं। कर्ण इस प्रकार दानी बताया गया है जो थोड़ा मांगने पर अधिक दे देता है। सच्चा ज्ञानी इस बारे में चुंबक (कंजूष) जैसे दिखता है क्योंकि वह पात्रापात्र विचार कर आवश्यक उतना ही बोलता है। उसके पास इतना प्रत्यक्ष ज्ञान रहता है कि उसमें से किसको कितना दे यह उसे समस्या रहती है। ऐसे ज्ञानी जन साधारण जनता को इस प्रकार के कथित कर्ण रूप ज्ञानियों से अधिक कंजूस दिखते हैं। कर्ण की दानशूरता इस प्रकार छिछली एवं दिखावटी है।

कर्ण के कुंडल और कवच : कर्ण के जन्मतः कुंडल और सर्वांग व्यापित कवच बताये हैं जो जीवशास्त्र में असंभव बात है। इसमें भगवान वेदव्यास अपनी तीक्ष्ण बुद्धि चलाकर कथा में अधिक रंग भरते हैं। कान की शोभा उत्तम ज्ञान सुनने से बढ़ती है न कि केवल कुंडलों से। कर्ण के कान जन्मतः कुंडलें से आभूषित बताये हैं जो छिछला ज्ञान सुनकर सच्चा ज्ञान सुना यह वह मानते हैं। उसी प्रकार कुछ लोग इस प्रकार निर्लज्ज होते हैं कि उन्हें कठोर आलोचना करने पर भी तनिक लज्जा नहीं आती और वे अपना निंदनीय कर्म सदा के लिए चालू रखते हैं। वे मोटी चमड़ी के रहते हैं जिससे वे निंदनीय कर्म करने में तनिक भी शरमाते नहीं। इस प्रकार अभेद्या चर्म वृत्ति रखनेवाले निर्लज्ज व्यक्ति को वेदव्यास जन्मतः कवच से सर्वांग व्याप्त मानते हैं। आजकल कुछ लोग मानते है कि जन्मतः बच्चे अच्छे रहते हैं फिर समाज से कुवृत्तियां लेकर वह बुरे बनते हैं। परंतु यह बात पूर्ण सत्य नहीं है। बुरे कर्म करनेवाले नीच व्यक्तियों के नाक, कान, आंखें, गर्दन, ठुड्डी, कंधे, हाथ, पांव इत्यादि इंद्रियां जन्मतः उनके प्राप्त स्वाभावानुकूल रहती हैं। बड़े होने पर उनके स्वभाव अधिक तीव्र बनते हैं। खूनी लोगांे की आंखें तिरछी, कान भौवों के सरल लकीर से नीचे या ऊंचे, थुथरी और नाक की रचना खूनी व्यक्ति जैसे रहती है, यह अवयव रचना उनके जन्मकाल से ही रहती है। उनके स्वभाव अनुसार उन्हें वातावरण मिलने पर वे अधिक खराब खूनी बनते हैं और अच्छा वातावरण सदा मिलने पर उनके बुरे स्वभाव की मात्रा कुछ कम रहती है, परंतु उनका मूल स्वभाव थोड़ा कायम रहता ही है। अवयवों की मूल रचना द्वारा हर व्यक्ति का स्वभाव पहचाना जा सकता है जिसका एक बृहत शास्त्र प्राचीन भारत में विद्यमान था। आज उस शास्त्र को 'फिजियोग्नामि' (Physiognamy) कहते हैं जो अभी बाल्यावस्था में है। प्राचीन भारतीय अवयव-स्वभावशास्त्र को लेकर वेदव्यासजी लिखते है कि, कर्ण के कुण्डल और कवच उसके जन्म से ही प्राप्त हैं। कर्ण के इनक वच कुंडलों की एक सुंदर कथा व्यासजी ने कर्ण जीवन पर रची है। कौरव सेना का सेनापति इस नाते कर्ण दो दिन रहता है जिसमें से एक दिन बीत चुकता है परंतु उस दिन पांडव मारे नहीं गए। दुर्योधन कर्ण के पास जा पहुंचा और उसरने कर्ण की प्रतिज्ञा की उसे याद दिलायी जिस द्वारा कर्ण पांडवों को समाप्त करे। उसने यह भी याद दिलाया कि वह कौरवों का नमक खाकर पांडवों का बड़ा भाई होने के कारण उनके लिए हमदर्दी रखता है। यह बात कर्ण को हृदयविदकर लगी। उसी रात्रि को कर्ण ने प्रतिज्ञा की कि वह दूसरा दिन उदय होते ही सब पांडवों को समाप्त करेगा। यह सुनकर दुर्योधन उस रात्रि को सुख से सोया कारण उसके शत्रु पांडव अब संभवतः मारे जायंगे। दुर्योधन जानता था कि कर्ण तेज स्वभाव का है और वीर भी है। यहां पाठक जाने कि कर्ण की यह वीरता केवल शाब्दिक ज्ञान की थी, प्रत्यक्ष नहीं। पाण्डवों के शिविर में यह बात जा पहुंची और पाण्डव उस

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

कारण बेचैन हुए। कर्ण जो कहेगा वह सच करेगा, कारण कर्ण युद्धशास्त्र में परमवीर है। उन्होंने श्रेष्ठ बुद्धि भगवान श्रीकृष्ण की सलाह ली जिन्होंने पांडवों को सुयोग्य प्रदर्शन किया। श्रीकृष्ण जानते थे कि कर्ण बड़ा दानी है और उसे प्रातःकाल ब्राह्मण के रूप में जो कुछ मांगेगा वह उसे तुरंत देगा। यहां ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्म जानेवाली साधक की अवस्था है। भगवान ने धर्मराज को ब्राह्मण बनकर कर्ण के शिविर में जाकर उसे उसके कवच और कुंडल मांगने को कहा। उन्हें विश्वास था कि कर्ण की प्रशंसा करने पर कर्ण धर्म रूप ब्रह्म जाननेवाले ब्राह्मण याचक को अवश्य कवच एवं कुंडल का दान देगा। दूसरे दिन धर्म का स्वरूप जानने वाले धर्मराज ब्रह्म जाननेवाली दान की मांग करने कर्ण के द्वार पर गए। धर्म स्वरूप ब्रह्म जाननेवाले ब्राह्मण अतिथि की मांग कर्ण ने तुरंत मान्य की और अपने कुंडल और कवच निकाल कर उस अतिथि ब्राह्मण को दिये। आशय यह कि ब्रह्म जानने के लिए कर्ण ब्रह्म जाननेवाले सच्चे ब्राह्मण वृत्ति को अपने कुवृत्ति रूप कवच और कुंडल दे जिससे कर्ण वृत्ति नष्ट होकर कर्ण वृत्ति सच्चा ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करें। कर्ण का दान पाकर पांडव प्रसन्न हुए कारण उनकी निर्लज्जता के कुंडल और कवच निकलने से अर्जुन रूप सत्य ज्ञान के साधक को कर्ण वृत्ति मारकर उस नीच वृत्ति को ब्रह्म जाननेवाली ब्रह्म वृत्ति में ले जाना सुलभ हुआ। कर्ण की मृत्यु होना अर्थात् कर्ण रूप छिछली वृत्ति नष्ट होकर अ बवह ब्रह्म रूप बनना है। दूसरा दिन हुआ और दुर्दम आशा के साथ कर्ण रण में पांडवों से युद्ध करने गया। अर्जुन और कर्ण में युद्ध छिड़ गया। कर्ण अब अपनी जान पर उतारू होकर अर्जुन से लड़ता है वह अब जानता था कि उसका कवच उसके अंग पर नहीं है। अर्जुन के शर उसके शरीर को विदीर्ण करते रहे। कर्ण खून से लथपथ भर गया। कर्ण के रथ का सारथी शल्य जो कि पांडवों का मामा अर्थात् हितैषी है। कर्ण से वह दो शर्तों पर उसके रथ का सारथ्य करने राजी हुआ। शर्तें यह थी कि शल्य कर्ण को साफ-साफ बातें कहेगा और वह उसका सारथ्य कार्य छोड़कर अन्य काम न करेगा। शल्य का आशय है कांटा या मन में चुभने वाली बातें। कर्ण के मन में यह बात अब चुभ रही थी कि वह अच्छा काम नहीं कर रहा है। यही शल्य का कर्ण को स्पष्ट कहना है। इतने में कर्ण के रथ का एक पहिया भूमि में धंस गया। पहिये को ऊपर निकालने के लिए कर्ण निहत्था रथ के नीचे उतरा। अब उसे याद आया कि उसने उस देवगौ को जो मारपीट कर भूमि में धंसाया उसका फल वह अब भोग रहा है। परंतु कर्ण अट्टाहासी वृत्ति को कायम रखनेवाला वीर पहिया निकालने में लगा। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को याद दिलाई कि कर्ण जैसे नीच को मारने का वही श्रेष्ठ अवसर है। कर्ण ने अर्जुन को युद्ध नीति की याद दिलाई कि निहत्थे शत्रु पर प्रहार नहीं करना चाहिए। उस समय कर्ण निहत्था शस्त्रहीन था। भगवान ने कर्ण को उन्हें धर्म का उपदेश करने का कोई अधिकार नहीं यह स्पष्ट बताया। कारण दुर्योधन के साथ रहकर उसने पांडवों पर लगातार जो अन्याय किए उसका स्मरण भगवान ने कर्ण को दिया। कर्ण ने प्रारंभ से ही अन्यायी और अधर्मियों का साथ दयिा ऐसे अधर्मी को अधर्म से ही मारना श्रेष्ठ धर्म है, भगवान कहने लगे। अर्जुन ने अपने ब्रह्म स्वरूप बनाने वाले आत्म रूप तीर चलाकर कर्ण को काल के पाश में भेज कर कर्ण वृत्ति अर्जुन के ब्रह्म को लक्षित करनेवाले शरों से मारी गई। और कर्ण वृत्ति अब ब्रह्म जाननेवाली ब्रह्म स्वरूप बनी। रामायण महाभारत में जो व्यक्ति मारा जाता है वह अपनी नीच वृत्ती त्याग कर उच्च वृत्ति को प्राप्त करता है। कर्ण जीवन में आनेवाले सब व्यक्ति रूप नाम योग शास्त्र में आनेवाला प्राप्त करता है।

संदर्भग्रंथ सूची

भटनागर, आर.पी. और भटनागर, मीनाक्षी (2007). शिक्षा अनुसंधान. मेरठ: लाल बुक डिपो.

भिताडे, वि.रा. (2007). शैक्षिणिक संशोधन पद्धति. पुणे: नूतन प्रकाशन.

गुप्त, नत्थुलाल (2000). मूल्यपरक शिक्षा और समाज. नई दिल्लीः नमन प्रकाशन.

उनिया, राकेश प्रसाद (2002). श्रीमद्भागवत महापुराण के पात्रों का चारित्रिक मूल्यांकन.

पाण्डेय, दिनेश कुमार (2007). श्रीमद्भागवत महापुराण की सूक्तियों का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिशीलन.

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

काणे, डा. पी. वी. - धर्मशास्त्र का इतिहास

डा. शशिकला पाण्डेय (2007): समाज शिक्षा और विकास

स्वामी श्री अड़गानंबदजी: यर्थात गीता

योगीराज मनोहर श्रीमद भगवतगीता 'व्यास आशय

'संत रामपाल दास महाराज: गीता तेरा ज्ञान अमृत